කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලය - ශ්‍රී ලංකාව

දුරස්ථ සහ අඛණ්ඩ අධ්‍යාපන කේන්ද්‍රය

ශාස්ත්‍රවේදී (සාමාන්‍ය) උපාධි තෘතීය පරීක්ෂණය (බාහිර) - 2010
2012 අප්‍රේල්/ මැයි/ ජූනි

මානවශාස්ත්‍ර පීඨය

හින්දී - HIND E 3025

පුරාතන හින්දී සාහිත්‍ය ඉතිහාසය හා නූතන හින්දී පද්‍ය සාහිත්‍ය උද්ධෘත
(නියමිත හා අනියමිත)

ප්‍රශ්න සංඛ්‍යාව : 05 යි. කාලය : පැය 03 යි.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

---

01. निम्नलिखित पद्यांशों में से <u>किन्हीं दो</u> की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

(क) इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती ?

मानस सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल-कल ध्वनि से हैं कहती
कुछ विस्मृत बीती बातें ?

आती है शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी,
टकराती बिलखाती-सी
पगली-सी देती फेरी ?

(ख) दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या- सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर, --
किंतु जरा गंभीर, --- नहीं है उनमें हास–विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

(ग) हर युद्ध के पहले दुविधा लड़ती उबलते क्रोध से,
हर युद्ध के पहले मनुज है सोचता, क्या शस्त्र ही-
उपचार एक अमोघ है
अन्याय का, अपकर्ष का, विष का, गरलमय द्रोह का।

लड़ना उसे पड़ता मगर।
औ' जीतने के बाद भी,
रणभूमि में वह देखता है सत्य को रोता हुआ;
वह सत्य जो है रो रहा इतिहास के अध्याय में
विजयी पुरुष के नाम पर कीचड़ नयन का डालता।

02. 'निराला की रचनाओं में, तत्कालीन भारतीय समाज की दयनीय स्थिति का यथार्थ वर्णन द्रष्टव्य है।' सोदाहरण इस कथन की समीक्षा कीजिए। (20 अंक)

अथवा

'**आँसू** हिंदी साहित्य का विरह काव्य माना जाता है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

03. हिंदी साहित्य का युग विभाजन करते हुए आदिकालीन हिंदी साहित्य का विवरण कीजिए। (20 अंक)

04. संत कबीरदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक लेख लिखिए। (20 अंक)

05. निम्नलिखित पद्यांश की भावार्थ सहित व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

क्या कहा कठिन है काम, कभी ऐसा मत बोलो तुम।
कर सकते हो हर काम, शक्ति अपनी तो तोलो तुम।।

यदि कठिन नहीं है काम, भला उसका फिर करना क्या।
जिसको मंजिल तक जाना है, उसको फिर डरना क्या।
श्रम करते ही रहने से, हर मुश्किल हल होती है।
डूबे बिन सागर तल में, मिलता किसको मोती है।।

इसलिए कमर कस भाई, स्वागत कर कठिनाई का।
जूझा जो हँसकर, लाल वही है अपनी माई का।।
कायर ही कठिनाई का, रोना ले रुक जाते हैं।
वीरों के चरणों पर आकर, पर्वत तक झुक जाते हैं।

कमर कसना — तैयार होना
जूझना — लड़ना

*****